उच्च शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

डॉ० रंजना गुप्ता,

एसो सएट प्रोफ़ेसर , शिक्षाशास्त्र विभाग

श्री रामेश्वरदास अग्रवाल कन्या महा विद्यालय,हाथरस (उत्तर प्रदेश)

मंजू यादव ,छात्रा, एम०ए० फाइनल, शिक्षाशास्त्र, श्री रामेश्वरदास अग्रवाल कन्या महा विद्यालय, हाथरस (उत्तर प्रदेश)

शोध सारांश

किसी भी राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में विकास करने के लिये दो मूलभूत साधनों की आवश्यकता होती है प्राकृतिक संसाधन और मानव संसाधन । उच्च शिक्षा, उच्च स्तर के मानव संसाधनों का निर्माण करती है। यह देखा गया है, कि जिस राष्ट्र में उच्च स्तरीय मानव संसाधन की जितनी अधिक उपलब्धता होती है, वह राष्ट्र उतनी ही अधिक तेजी से विकास करता है। किसी राष्ट्र के किसी भी क्षेत्र में विकास के लिये उच्च स्तर के मानव संसाधन की आवश्यकता होती है। राष्ट्र का आर्थिक विकास तो औद्योगीकरण पर ही निर्भर करता है और औद्योगीकरण निर्भर करता है- वैज्ञानिक एवं तकनीशियनों पर, इंजीनियर और प्रशासकों पर और इनका निर्माण किया जाता है उच्च शिक्षा द्वारा।परंतु उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों ऐसी समस्याएँ है जिनको दूर किए बिना राष्ट्र का विकास सम्भव नहीं है।इस अध्ययन का उद्देश्य उन समस्याओं का पता लगाना है जो उच्च शिक्षा की प्रगति के मार्ग में बाधा उत्पन्न करती है।इस अध्ययन में वर्णात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया और स्व- निर्मित प्रश्नावली द्वारा प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या व विश्लेषण के लिए प्रतिशत की गणना की गयी ।अध्ययन के परिणामों के अनुसार उच्च शिक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र / छात्राओं में अपेक्षित ज्ञान का अभाव, अनुशासनहीनता ,सतत् मूल्यांकन का न होना,आरक्षण के कारण योग्य छात्रों को प्रवेश न मिल पाना,अनियमित शिक्षा सत्र व प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा का गिरता स्तर शिक्षकों ने उच्च शिक्षा की मुख्य समस्याएँ माना।

Key-Words- उच्च शिक्षा ,अभिमत , शिक्षक , समस्याएँ

देश के विकास के लिये मानवीय संसाधनों को विकसित करना आवश्यक होता है। मानवीय संसाधनों के विकास का महत्वपूर्ण कार्य शिक्षा द्वारा ही सम्भव किया जाता है। मानवीय संसाधनों के विकास की दृष्टि से उच्च शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। यद्यपि शिक्षा के सभी स्तर मानव संस्थान के विकास के महत्वपूर्ण अवयव है लेकिन यह उच्च शिक्षा ही है जो देश के आर्थिक विकास के जरिये जन साधारण के जीवन की गुणवत्ता में योगदान देती है। उच्च कोटि के सत्यान्वेषण के लिये विश्व विद्यालय ही प्रयोगशालायें हैं। ज्ञान के क्षेत्र को विस्तृत बनाने के लिये विश्व विद्यालय महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इग्लैंण्ड, अमेरिका, रूस तथा अन्य देशों में प्राथमिक शिक्षा को शिक्षा की आधार शिला के रूप में और उच्च शिक्षा को मुकुट और ताज के रूप में स्वीकार किया गया है। उच्च शिक्षा का यही स्थान भारत में भी है।

आधुनिक युग में भी उच्च शक्षा की प्रगति निरन्तर हो रही है और कॉलेजों तथा वश्व वद्यालयों की संख्या में भी असाधारण वृ द्ध हो रही है। उच्च शक्षा के क्षेत्र में भी कतिपय समस्याएँ है और भारत की शै क्षक व्यवस्था ऐसी ही अनेक समस्याओं से वपन्न है। ये समस्याएँ हैं-- उद्देश्यहीनता, दोषपूर्ण पाठ्यक्रम, शक्षा का माध्यम, व शष्टीकरण,दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, शक्षा का स्तर निम्न होना,अनुशासनहीनता, दलगत राजनीति इत्यादि वश्व वद्यालय स्तर पर इन समस्याओं का निराकरण अत्यन्त आवश्यक है।

। हुगाँयू कबीर ने कहा है क -"बहुत बार यह कहा गया है क वश्व वद्यालयों में जो शक्षा दी जाती है, वह व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन के लये तैयार नहीं करती। वशेष रूप से कहा जाता है क वश्व वद्यालयों से पढ़कर निकलने वाले छात्रों में शारीरिक श्रम और देहाती जीवन के प्रति अरू च हो जाती है। इस प्रकार वश्व वद्यालय एक ऐसा अ भकरण बन गये हैं जो गांवों से योग्य और होनहार को शहरों में खींच लाते हैं परन्तु इस प्रकार गाँव को हानि हो जाती है उससे शहरों को लाभ हो जाता हो, यह बात नही। गाँव के थे, वे शहर की अज्ञात जनसंख्या के एक हताश और कटु भावना से भरे छोटे से समाज में नेता बनने के बजाय जो क बड़ी आसानी से बन सकते सदस्य मात्र बनकर रह जाते हैं। "

अतः वर्तमान भारत में उच्च शक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन निम्न होता चला जा रहा है ।उच्च शक्षा में उन्नयन को आवश्यकता को देखते हुए सन् 1947 में आयोग का गठन कया। इस आयोग के सुझावों के आधार पर देश में उच्च शक्षा के क्षेत्र वश्व वद्यालय में सुधार की प्र क्रयाएँ प्रारम्भ हुई।

शक्षा देश के वकास का प्रमुख आधार है यदि उच्च शक्षा का गुणात्मक वकास नहीं हुआ तो प्रशासनिक और तकनीकी प्रगति, बौ द्धक और सामाजिक प्रगति के अवरूद्ध होने की सम्भवनायें बढ़ जाती हैं। डॉ० आर०के० संह का वचार है

"देश का वैभव वश्व वद्यालय से सम्बद्ध होता है। दू षत वश्व वद्यालय सम्पूर्ण राष्ट्र को दू षत कर देता है"।

अतः यह आवश्यक हो जाता है क वश्व वद्यालय प्रारूप में परिवर्तन कया जाय।डॉ० राधाकृष्णन कमीशन ने लखा है-" वश्व वद्यालय अपनी प्राचीन पद्धति से आवद्ध नहीं रह सकते हैं, समाज की बढ़ती हुई जटिलता और उसकी बदलती हुई सरंचना के कारण वश्व वद्यालयों को अपने उद्देश्यों में परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है।"

बढ़ती हुयी जनसंख्या और उच्च शक्षा की मांग को देखते हुए भारत में उच्च शक्षा के संख्यात्मक प्रसार पर वशेष ध्यान दिया गया। उच्च शक्षा के प्रसार के साथ-साथ नई समस्यायें उत्पन्न होती रही। कहा जा रहा है क शक्षा के स्तर और गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है, उच्च शक्षा उद्देश्य वहीन हो गई है, उच्च शक्षा का पाठ्यक्रम अनुपयोगी है, स्तरीय अनुसंधान नहीं हो रहे, और वश्व वद्यालय परिसर में अशान्ति बढ़ रही है, प्रवेश की समस्या दिन प्रतिदिन जटिल हो रही है।

इस समस्या का चुनाव उच्च शक्षा की समस्याओं का गहन अध्ययन के लये कया गया, जिससे उच्च शक्षा की समस्याओं के प्रति शक्षा वशेषज्ञों, सम्बन्धित अ धकारियों तथा वभागों आदि का ध्यान आकृष्ट कया जा सके, तथा उच्च शक्षा के उ चत वकास के मार्ग में योगदान दिया जा सके।

शोध के उद्देश्य

उच्च शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षको के अभिमत का अध्ययन करना ।

शोध विधि

उच्च शिक्षा की समस्याओं को जानने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रतिदर्श चयन

न्यादर्श के चयन के लिए समय व सीमा और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन के लिए हाथरस जिले के 3 वित्तपोषित महाविद्यालयों के 50 शिक्षक व शिक्षिकाओं को चुना।

उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों का चयन सुविधानुसार न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

उच्च शिक्षा की समस्याओं को जानने हेतु शोधार्थी ने इस शोध हेतु एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्राप्त आँकड़ों की व्याख्या और विश्लेषण करने के लिए प्रतिशत का प्रयोग किया गया।

परिणामों की व्याख्या व विश्लेषण

उच्च शिक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन करने के लिए मतावली को 6 भागों में बाँटा गया। प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर प्रश्नावली के प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के सन्दर्भ में प्रतिशत ज्ञात किया गया जिसे विभिन्न क्षेत्रानुसार अलग-अलग तालिकाओं में निम्न प्रकार से वर्णित किया गया:-

1. शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्यायें । 2.अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्यायें ।
3. शोधकार्यों से सम्बन्धित समस्यायें ।
4. मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्यायें ।
5. प्रवेश से सम्बन्धित समस्यायें ।
6. अन्य समस्यायें ।

1.उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिमत का अध्ययन

उच्च शिक्षा में शिक्षण अधिगम से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शिक्षकों के अभिगत को स्पष्ट करने वाली तालिका संख्या 1 द्वारा प्रदर्शित किया गया है-

ता लका संख्या-1

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में) हाँ
सैद्धान्तिक वषयों की अ धकता	62
कक्षाओं का उ चत आकार न होना	64
कार्य दिवसों का अपर्याप्त होना	76
उच्च शक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्राओं में अपे क्षत ज्ञान का अभाव	94
प्र श क्षत तथा योग्य शक्षकों की कमी	68
शक्षण अ धगम हेतु मनोवैज्ञानिक तथा नवीनतम शक्षण व धयों का प्रयोग न होना।	76
शक्षा का माध्यम उ चत न होना	42
औपचारिक तथा अनौपचारिक शक्षा अ भकरणों की पर्याप्त सु वधा न होना	74
सीखने व पढ़ने के लए उ चत पुस्तकालयों का न होना।	78
सुसज्जित प्रयोगशालाओं का न होना।	80

ता लका संख्या 1 में प्रद र्शत परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है क शक्षण अ धगम से सम्बन्धित समस्याओं का वरीयताक्रम के अनुसार अध्ययन कया जाये तो सर्वा धक 94% शक्षकों ने उच्च शक्षा में प्रवेश लेने वाले छात्र/छात्राओं में अपे क्षत ज्ञान का अभाव माना जब क 80% में सुसज्जित प्रयोगशालाओं का न होना माना, 78% ने सीखने व पढ़ने के लए उ चत पुस्तकालयों का न होना, 76% ने कार्य दिवसों का अपर्याप्त होना व शक्षण अ धगम हेतु मनोवैज्ञानिक तथा नवीनतम शक्षण व धयों का प्रयोग न होना, 74% ने औपचारिक तथा अनौपचारिक शक्षा अ भकरणों की पर्याप्त सु वधा न होना, 68% ने प्र श क्षत तथा योग्य शक्षकों की

कमी, 64% ने कक्षाओं का उ चत आकार न होना, 62% ने सैद्धान्तिक वषयों की अ धकता का होना माना जब क केवल 42% शक्षकों ने शक्षा का माध्यम उ चत न होना स्वीकार कया।

2.उच्च शक्षा में अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शक्षकों के अ भमतों का अध्ययन -

उच्च शक्षा में अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शक्षकों के अ भमत को स्पष्ट करने वाली ता लका

ता लका संख्या 2

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर (प्रतिशत में)
छात्र/छात्राओं का अनिश्चित भ वष्य	86
उच्च शक्षा के बाद उ चत रोजगार न मल पाना	84
शक्षक छात्र संख्या का अनुपात उ चत न होना	90
छात्रों एवं शक्षकों में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव	74
शक्षा संस्थाओं में शक्षण तथा अ धगम हेतु अपर्याप्त सु वधायें	66
शक्षा संस्थाओं में छात्र संघों के चुनाव व राजनैतिक दलों का हस्तक्षेप	48
जनसंचार माध्यमों का अत्य धक व अनु चत प्रयोग	66
सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास	86
समाज में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता	92
निर्देशन व परामर्श सेवाओं का अभाव	90

ता लका संख्या 2 में प्रद र्शत परिणामों से स्पष्ट होता है क अनुशासनहीनता से सम्बन्धित समस्याओं में 92% शक्षकों ने समाज में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता को जिम्मेदार माना, 90% शक्षकों ने शक्षक छात्र संख्या का अनुपात उ चत न होना तथा निर्देशन व परामर्श सेवाओं का अभाव, 86% ने छात्र/छात्रओं का अनिश्चित भ वष्य तथा सामाजिक एवं नैतिक मूल्यों में ह्रास, 84% ने उच्च शक्षा के बाद उ चत रोजगार न मल पाना, 74% ने छात्रों एवं शक्षकों में पारस्परिक सम्पर्क का अभाव, 66% ने शक्षा संस्थाओं में शक्षण तथा अ धगम हेतु अपर्याप्त सु वधायें तथा जनसंचार माध्यमों का अत्य धक व अनु चत प्रयोग माना ।अनुशासनहीनता से

सम्बन्धित समस्याओं में 48% शक्षकों ने शक्षा संस्था में छात्र संघों के चुनाव व राजनैतिक दलों का हस्तक्षेप होना स्वीकार कया।

3. उच्च शक्षा में शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शक्षकों के अ भमत का अध्ययन

उच्च शक्षा में शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में शक्षकों के अ भमतों को स्पष्ट करने वाली ता लका

ता लका संख्या 3

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर (प्रतिशत में)
मौ लक व स्तरीय अनुसन्धानों का अभाव	76
सक्षम तथा योग्य शोध निर्देशकों की कमी	68
शोध निर्देशकों की सघन शक्षण दिनचर्या	50
शोधकार्य निर्देशन हेतु कोई अतिरिक्त पारिश्र मक न मलना	78
शोध के लए पर्याप्त अनुदान न मलना	78
अनुसंधान के लए उ चत संसाधन उपलब्ध न होना	80
से मनार एवं कार्यशाला आदि का उ चत आयोजन न होना	78
स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसंधान व धयों का अध्ययन अनिवार्य न होना ।	74
शोध छात्र/छात्रओं हेतु कसी पूर्व प्र शक्षण की व्यवस्था न होना	82
अनुसंधान कार्यों में अध्यापकों तथा प्रशासकों का उ चत सहयोग न मलना।	66

ता लका संख्या 3 में प्रद र्शत परिणामों को स्पष्ट करने पर यह ज्ञात हुआ क शोध कार्यों से सम्बन्धित समस्याओं में सबसे अ धक 82% शक्षकों ने शोध छात्र/छात्राओं उ चत संसाधन उपलब्ध न होना, 78% ने शोध कार्य निर्देशन हेतु कोई अतिरिक्त कार्यशाला आदि का उ चत आयोजन न होना, 76% शक्षकों ने मौ लक व

स्तरीय अनुसन्धानों का अभाव, 74% ने स्नातकोत्तर स्तर पर अनुसन्धान व धयों का अध्ययन अनिवार्य न होना। 68% ने सक्षम तथा योग्य शोध निर्देशकों की कमी, 66% ने अनुसन्धान कार्यों में अध्यापकों तथा प्रशासकों का उ चत सहयोग न मलना, 50% शक्षकों ने शोध निर्देशकों की सघन शक्षण दिनचर्या को स्वीकार कया।

4.उच्च शक्षा में मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमत का अध्ययन

उच्च शक्षा में मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमतों को स्पष्ट करने वाली ता लका

ता लका संख्या **4**

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में)
दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली।	74
सतत् मूल्यांकन का न होना।	86
ग्रेड प्रणाली का न होना।	50
से मस्टर प्रणाली का न होना।	70
मूल्यांकन में पारद र्शता का न होना।	82
मूल्यांकन में अशै क्षक पक्षों को स्थान न देना।	48
मूल्यांकन कार्य से सम्बन्धित शक्षकों के लए अ भनवन कार्यक्रमों की व्यवस्था का न होना।	78
मूल्यांकन हेतु प्रदत्त उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या का उ चत निर्धारण न होना।	52
वस्तुनिष्ठ एवं समस्या आधारित प्रश्नों का प्रश्न पत्रो में अभाव होना ।	44
उच्च स्तर की परीक्षाओं में वश्वसनीयता एवं वैधता का अभाव होना	60

ता लका संख्या 4 में प्रद र्शत परिणामों से स्पष्ट होता है क यदि मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन कया जाये तो सर्वा धक 86% शक्षकों ने सतत् मूल्यांकन का न होना, 82% शक्षकों ने मूल्यांकन में पारद र्शता का न होना, 78% शक्षकों ने मूल्यांकन कार्य से सम्बन्धित शक्षकों के लए अ भनवन कार्यक्रमों की

व्यवस्था न होना, 74% शक्षकों ने दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली, 70% ने से मस्टर प्रणाली का न होना, 60% ने उच्च स्तर की परीक्षाओं में वश्वसनीयता एवं वैधता का अभाव होना, 52% शक्षकों ने मूल्यांकन हेतु प्रदत्त उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या का उ चत निर्धारण न होना, 50% ने ग्रेड प्रणाली का न होना, जब क मूल्यांकन में अशै क्षक पक्षों को स्थान न देने को केवल 48% शक्षकों ने मूल्यांकन से सम्बन्धित समस्याओं का कारण माना ।

5. उच्च शक्षा में प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमत का अध्ययन

उच्च शक्षा में प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमतों को स्पष्ट करने वाली ता लका

ता लका संख्या- 5

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर(प्रतिशत
कॉलेज में वद्या र्थयों की बढ़ती भीड़।	70
अपे क्षत योग्यता न रखने वाले छात्रों का प्रवेश ।	82
आरक्षण के कारण योग्य छात्रों को प्रवेश न मल पाना ।	90
कॉलेजों व वश्व वद्यालय में अवांछनीय तत्वों को प्रवेश मलना	74
प्रवेश के नियमों में श थलता ।	68
उच्च शक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के नियमों में एकरूपता का न होना।	56
उ चत प्रवेश परीक्षा का प्रवेश हेतु आयोजन न होना।	80
वद्या र्थयों की संख्या का निर्धारण संस्थाओं में उपलब्ध शक्षक संख्या व शक्षण सु वधाओ के आधार पर न होना।	82
प्रवेश की प्र क्रया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना।	80
प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना ।	58

ता लका संख्या 5 में प्रद र्शत परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है क प्रवेश से सम्बन्धित समस्याओं के संदर्भ में 90% शक्षकों ने आरक्षण के कारण योग्य संख्या व शक्षण सु वधाओं के आधार पर न होना माना,

80% ने प्रवेश हेतु उ चत प्रवेश परीक्षा का आयोजन न होना तथा प्रवेश की प्र क्रया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना, 74% शक्षकों ने कॉलेजों व वश्व वद्यालय में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश मलना, 70% ने कालेज में वद्या र्थयों की बढ़ती भीड़, 68% ने प्रवेश के नियमों में श थलता, 58% ने प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना, 56% शक्षकों ने स्वीकार कया क छात्रों को प्रवेश न मल पाना माना। जब क 82% शक्षकों ने अपे क्षत योग्यता न रखने वाले छात्रों का प्रवेश तथा वद्या र्थयों की संख्या का निर्धारण संस्थाओं में उपलब्ध शक्षक संख्या व शक्षण सु वधाओं के आधार पर न होना माना , 80% ने प्रवेश हेतु उ चत प्रवेश परीक्षा का आयोजन न होना तथा प्रवेश की प्र क्रया का निर्धारित समय में पूर्ण न होना, 74% शक्षकों ने कॉलेजों व वश्व वद्यालय में अवांछनीय तत्वों का प्रवेश मलना, 70% ने कालेज में वद्या र्थयों की बढ़ती भीड़, 68% ने प्रवेश के नियमों में श थलता, 58% ने प्रवेश पूर्व परीक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर होना, 56% शक्षकों ने स्वीकार कया क उच्च शक्षा की संस्थाओं में प्रवेश के नियमों में एकरूपता नहीं है।

6. शक्षा में अन्य समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमत का अध्ययन

उच्च शक्षा में अन्य समस्यओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमतों को स्पष्ट करने वाली ता लका

ता लका संख्या 4.6

समस्या से सम्बन्धित पद क्रमानुसार	शक्षकों के उत्तर(प्रतिशत में
उच्च शक्षा का उद्देश्यहीन होना।	66
उच्च शक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम	64
पाठ्यक्रम का जीवनोपयोगी न होना।	70
पाठ्यक्रम का प्रभावी व्यावसायीकरण न होना।	78
शक्षा का निजीकरण	70
वश्व वद्यालय तथा महा वद्यालयों को उ चत स्वायत्तता न मलना।	76
परीक्षाफल समय पर घो षत न होना।	90
अनिय मत शक्षा सत्र	94
उच्च शक्षा में बढ़ता हुआ अपव्यय व अवरोधन	74

वद्यालय स्तर पर दोषपूर्ण शक्षा	82
प्राथ मक तथा माध्य मक शक्षा का गरता स्तर	94
माध्य मक शक्षा के पाठ्यक्रम का उच्च शक्षा पाठ्यक्रम से तालमेल का अभाव	82

ता लका संख्या 6 में प्रद र्शत परिणामों के आधार पर यह स्पष्ट होता है क अन्य समस्याओं के सन्दर्भ में 94% शक्षकों ने अनिय मत शक्षा सत्र तथा प्राथ मक तथा माध्य मक शक्षा का गरता स्तर को जिम्मेदार माना, 90% शक्षकों ने परीक्षाफल समय पर घो षत न होना, 82% शक्षकों ने वद्यालय स्तर पर दोषपूर्ण शक्षा तथा माध्य मक शक्षा के पाठ्यक्रम का उच्च शक्षा के पाठ्यक्रम से तालमेल का अभाव, 78% शक्षकों ने पाठ्यक्रम का प्रभावी व्यावसायीकरण न होना, 76% शक्षकों ने वश्व वद्यालय तथा महा वद्यालयों को उ चत स्वायत्तता न मलना, 74% शक्षकों ने उच्च शक्षा में बढ़ता हुआ अपव्यय व अवरोधन, 70% ने पाठ्यक्रम का जीवनोपयोगी न होना तथा शक्षा का निजीकरण, 66% शक्षकों ने उच्च शक्षा का उद्देश्यहीन होना तथा 64% शक्षकों ने स्वीकार कया क उच्च शक्षा का दोषपूर्ण पाठ्यक्रम अन्य समस्याओं में सबसे अ धक जिम्मेदार है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

राय, पारस नाथ(1973),"अनुसन्धान परिचय", लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,आगरा

पाठक, पी० डी०(1974),"भारतीय शक्षा और उसकी समस्याएँ", वनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा

पाण्डेय, रामशकल (1979)"भारतीय शक्षा की सामयिक समस्याएँ" वनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-2

अग्रवाल, वी० वी० (1980),"आधुनिक भारतीय शक्षा और उसकी समस्याएँ", वनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-2

एच0के0 क पल (2001)"अनुसन्धान व धयाँ" एच०पी० भार्गव बुक हाउसभार्गव भवन,कचहरी घाट आगरा

गुप्ता, एस०पी०(2002), "भारतीय शक्षा का इतिहास, वकास एवं समस्याएँ",शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद

रमन वहारी लाल (2005)"भारतीय शक्षा का वकास व उनकी समस्याएँ",रस्तौगी प्रकाशन,मेरठ

शर्मा, आर०ए० (2007)" शक्षा अनुसन्धान",आर० लाल बुक डपो,मेरठ

डॉ० रामपाल संह,डॉ० ओ०पी० शर्मा (2007-08)
"शै क्षक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी",अग्रवाल पब्लिकेशन,आगरा

वार्ष्णेय,भावना (2009) "प्राथ मक स्तर पर कार्यरत शक्षकों की समस्याओं का अध्ययन" श्री रामेश्वर दास अग्रवाल कन्या महा वद्यालय, हाथरस

सन्हा, नीता (2010) प्रो० मदन मोहन,"भारतीय शक्षा की समसामयिक समस्याएँ,न्यू कैलाश प्रकाशन, इलाहाबाद

रेखा (2010)"स्त्री शक्षा की समस्याओं के सन्दर्भ में शक्षकों के अ भमत का अध्ययन" श्री रामेश्वर2. दास अग्रवाल कन्या महा वद्यालय

सारस्वत, मालती गौतम, एस0एल0,"भारतीय शक्षा का वकास एवं सामयिक समस्याएँ" आलोक प्रकाशन,लखनऊ, इलाहाबाद

अग्निहोत्री, र वन्द्र "आधुनिक भारतीय शक्षा का इतिहास और उसकी समस्याये" राजस्थान हिन्दीग्रन्थ अकाडमी जयपुर।

वर्मा,प्रीती वर्मा व श्रीवास्तव डी०एन (1971) "मनो वज्ञान और शक्षा में सांख्यिकी", वनोद पुस्तक मन्दिर,आगरा-2

त्रिपाठी,रघुवंश,"अप्राच लक सांख्यक़ीं",एच०पी० भार्गव बुक हाउसभार्गव भवन,कचहरी घाट आगरा